International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 05-10-2025, Accepted: 04-11-2025, Published: 20-11-2025
Volume 7, Issue 6, 2025, Page No. 39-40

# महात्मा गांधी के विचारों की वर्तमान राजनीति में प्रासंगिकता

**Sachin Meena, Tara Chand Meena**
Department of history, Anchi ka bass moti nagar colony, bandikui, Dausa, Rajasthan, India
Net-JRF History, Village Post jastana tehsil-bonli, sawai madhopur, Rajasthan, India

**सारांश**
महात्मा गांधी भारतीय राजनीति के नैतिक स्तंभ माने जाते हैं, जिन्होंने सत्य, अहिंसा, और नैतिकता को राजनीतिक जीवन का आधार बनाया। आज जब भारतीय राजनीति भ्रष्टाचार, जातिवाद, सांप्रदायिकता और सत्ता–लालसा जैसी समस्याओं से ग्रस्त है, तब गांधीवाद की प्रासंगिकता पहले से अधिक महसूस की जा रही है। गांधीजी का मानना था कि राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्ति नहीं, बल्कि जनसेवा और सामाजिक न्याय होना चाहिए। उनके सिद्धांत जैसे ग्राम स्वराज, स्वावलंबन, सर्वधर्म समभाव और पारदर्शिता, आधुनिक लोकतंत्र को नैतिक दिशा प्रदान करते हैं। वर्तमान समय में जब लोकतांत्रिक संस्थाएँ विश्वास संकट का सामना कर रही हैं, गांधीवादी मूल्य राजनीति को मानवतावादी और जनोन्मुख बना सकते हैं। गांधीवाद आज के भारत के लिए केवल एक ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि सामाजिक पुनरुद्धार और नैतिक पुनर्निर्माण का मार्गदर्शक है। यह शोध–पत्र आधुनिक भारतीय राजनीति में गांधीवादी सिद्धांतों की प्रासंगिकता, उनके व्यवहारिक प्रयोग, और समसामयिक राजनीतिक चुनौतियों के समाधान में उनकी भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

**मूल शब्द:** गांधीवाद, भारतीय राजनीति, अहिंसा, सत्य, नैतिकता, ग्राम स्वराज, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, स्वावलंबन, सर्वधर्म समभाव

## प्रस्तावना

### गांधीवादी विचार और भारतीय राजनीति का नैतिक आधार

महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वह महानायक थे जिन्होंने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन का साधन बनाया। उनके जीवन और विचारों ने भारतीय राजनीति को नई दिशा दी, जहाँ नैतिकता, आत्मसंयम, और मानवता सर्वोपरि मानी गई। गांधीजी का मानना था कि राजनीति और नैतिकता एक–दूसरे से पृथक नहीं हो सकते। उन्होंने स्पष्ट कहा था कृ "राजनीति बिना नैतिकता के पाप है।" यह कथन आज भी भारतीय राजनीति की आत्मा को झकझोरने वाला है। वर्तमान में राजनीति में जिस प्रकार स्वार्थ, हिंसा, और धनबल का प्रभाव बढ़ा है, वहां गांधीजी के आदर्शों की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है।

भारत का संविधान और लोकतांत्रिक ढाँचा गांधीवादी विचारों से गहराई से प्रभावित है। गांधीजी ने जनकल्याण, समानता, और आत्मनिर्भरता को राजनीतिक जीवन का अभिन्न अंग माना। आज जब राजनीति अक्सर जाति, धर्म और सत्ता की प्रतिस्पर्धा में उलझी दिखाई देती है, तब गांधीवादी दृष्टिकोण हमें यह सिखाता है कि राजनीति का वास्तविक उद्देश्य केवल शासन नहीं, बल्कि "सेवा" और "समानता" है। गांधीजी के विचार न केवल भारतीय लोकतंत्र की नींव हैं, बल्कि उसे दिशा देने वाली आत्मा भी हैं।

### गांधीवाद का सार और राजनीतिक दर्शन: सत्य, अहिंसा और नैतिकता की त्रिवेणी

गांधीवाद के मूल में तीन प्रमुख तत्व हैं कृ सत्य, अहिंसा, और सर्वधर्म समभाव। गांधीजी के लिए सत्य केवल बोलने की सच्चाई नहीं था, बल्कि जीवन का परम सिद्धांत था। वे मानते थे कि हर कार्य का अंतिम उद्देश्य सत्य की प्राप्ति होना चाहिए। राजनीति में सत्य का अर्थ है — पारदर्शिता, ईमानदारी, और जनता के प्रति जवाबदेही।

अहिंसा गांधीजी की राजनीति का दूसरा प्रमुख आधार थी। उनके अनुसार, "अहिंसा केवल हिंसा का अभाव नहीं, बल्कि प्रेम और सहानुभूति की सक्रिय भावना है।" राजनीतिक संघर्षों में उन्होंने अहिंसक उपायों जैसे सत्याग्रह और असहयोग को अपनाया, जिससे राजनीति नैतिक और जन–समर्थक बनी। आज जब राजनीतिक हिंसा, घृणा, और विभाजन की राजनीति समाज को तोड़ रही है, गांधीजी की अहिंसा की नीति समाज को जोड़ने की शक्ति प्रदान करती है।

गांधीजी के राजनीतिक दर्शन में धर्म का अर्थ किसी विशेष आस्था से नहीं, बल्कि नैतिक जीवन से था। वे कहते थे — "मेरा धर्म सत्य और अहिंसा में निहित है।" उनकी दृष्टि में राजनीति और धर्म दोनों का उद्देश्य मानव कल्याण है। इसलिए गांधीवादी राजनीति जनकल्याण, सेवा, और समानता पर आधारित है। यह दर्शन आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था को नैतिक गहराई और सामाजिक दिशा प्रदान कर सकता है।

### गांधीवादी मूल्य और भारतीय लोकतंत्र की वर्तमान चुनौतियाँ

आज का भारतीय लोकतंत्र अनेक चुनौतियों से घिरा हुआ है — भ्रष्टाचार, धनबल, जातिवाद, सांप्रदायिकता, और सत्ता की लालसा। राजनीति अब लोकसेवा की बजाय "व्यवसाय" बनती जा रही है। जनता का विश्वास राजनीतिक संस्थाओं से कमजोर हुआ है। ऐसे समय में गांधीवादी मूल्य लोकतंत्र को नैतिक आधार प्रदान करने का सबसे सशक्त विकल्प हैं।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध गांधीजी का उत्तर था — सत्य और पारदर्शिता। उन्होंने कहा था कि "ईमानदारी ही सबसे बड़ी पूंजी है।" यदि राजनीतिक नेतृत्व गांधीवादी नैतिकता अपनाए, तो शासन में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व स्वतः स्थापित होगा।

जातिवाद और सामाजिक असमानता के खिलाफ गांधीजी ने हरिजन आंदोलन चलाया और अस्पृश्यता को "मानवता के खिलाफ अपराध" बताया। आज भी राजनीति में जातीय समीकरण हावी हैं, ऐसे में गांधीजी की सामाजिक समरसता की भावना भारतीय समाज को एकजुट कर सकती है।

सांप्रदायिकता और धार्मिक कट्टरता के दौर में गांधीजी का सर्वधर्म समभाव भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा था कि "सभी धर्मों का सार एक ही है — प्रेम और सेवा।" वर्तमान राजनीति में धार्मिक ध्रुवीकरण को समाप्त करने के लिए गांधीवादी दृष्टि अत्यंत उपयोगी है।

राजनीतिक हिंसा के बढ़ते घटनाक्रम में गांधीजी का अहिंसा सिद्धांत न केवल राजनीति, बल्कि समाज में भी शांति स्थापित करने का मार्ग दिखाता है। गांधीवाद इस बात पर ज़ोर देता है कि मतभेद संवाद से सुलझाए जाएँ, न कि संघर्ष से।

### गांधीजी की ग्राम स्वराज और आत्मनिर्भरता की अवधारणा: आज की राजनीति के लिए मार्गदर्शन

गांधीजी का राजनीतिक दर्शन केवल सत्ता के केंद्रों तक सीमित नहीं था। वे "नीचे से ऊपर" की राजनीति के समर्थक थे। उनकी ग्राम स्वराज की अवधारणा इस बात पर आधारित थी कि वास्तविक लोकतंत्र तभी संभव है जब हर गाँव, हर व्यक्ति अपने जीवन के निर्णय में सहभागी बने। उन्होंने कहा था — "भारत का भविष्य उसके गाँवों में बसता है।"

आज जब राजनीतिक सत्ता शहरी केंद्रों में सिमटती जा रही है और ग्रामीण समाज विकास की दौड़ में पीछे छूट रहा है, तब गांधीजी की ग्राम स्वराज की परिकल्पना हमें समावेशी राजनीति की दिशा देती है। स्थानीय स्वशासन, पंचायत राज, और विकेन्द्रीकृत योजना प्रणाली गांधीवादी विचारों का ही विस्तार है।

गांधीजी की स्वावलंबन की नीति आज के "आत्मनिर्भर भारत" की जड़ में दिखाई देती है। उन्होंने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार से लेकर खादी और स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन देकर यह सिद्ध किया कि आर्थिक स्वतंत्रता ही राजनीतिक स्वतंत्रता का आधार है। आज की राजनीति यदि वास्तव में आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार करना चाहती है, तो उसे गांधीजी के स्वावलंबन और श्रम की गरिमा के सिद्धांत को अपनाना होगा।

ग्राम स्वराज का अर्थ केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि लोकतंत्र का स्थानीयकरण भी है। इससे जनता शासन का सक्रिय भाग बनती है। आज के समय में जब जनता और शासन के बीच दूरी बढ़ रही है, गांधीजी की ग्राम स्वराज की अवधारणा जनता को पुनः राजनीति का केंद्र बना सकती है।

### आधुनिक राजनीति में गांधीवाद की प्रासंगिकता और व्यवहारिक उपयोगिता

गांधीवादी विचार आज भी भारतीय राजनीति में अनेक रूपों में उपस्थित हैं। स्वच्छ भारत अभियान, ग्रामीण विकास योजनाएँ, समानता और सामाजिक न्याय के प्रयास — सभी गांधीवादी मूल्यों से प्रेरित हैं। परंतु इन योजनाओं का नैतिक और मानवीय उद्देश्य तभी पूरा होगा जब उन्हें गांधीजी की भावना के अनुरूप लागू किया जाए।

गांधीजी ने राजनीति में नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता पर बल दिया था। आज जब राजनीतिक दलों में विचारधारा से अधिक सत्ता की प्रतिस्पर्धा प्रमुख है, गांधीजी की नैतिक राजनीति ही लोकतंत्र की आत्मा को पुनर्जीवित कर सकती है। उनके अनुसार, सच्चा नेता वह है जो "पहले स्वयं पर शासन करता है, तभी दूसरों पर शासन का अधिकार रखता है।"

आज के वैश्वीकरण और उपभोक्तावादी युग में राजनीति में मूल्यों का क्षरण बढ़ रहा है। गांधीवाद इस प्रवृत्ति के विरुद्ध एक संतुलित वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। गांधीजी की सादगी, आत्मसंयम और जनसेवा की भावना राजनीति को पुनः मानवीय बनाती है।

गांधीवाद का प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं रहा। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन के लिए गांधीजी के अहिंसा सिद्धांत को अपनाया, जबकि नेल्सन मंडेला ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध संघर्ष में गांधीवादी मार्ग अपनाया। इससे स्पष्ट है कि गांधीजी की विचारधारा सार्वभौमिक है — यह किसी एक देश, धर्म या काल की सीमाओं में नहीं बंधी।

गांधीवादी राजनीति का मूल संदेश यह है कि "राजनीति का उद्देश्य सत्ता नहीं, सेवा है।" यदि आज की राजनीति इस सिद्धांत को आत्मसात करे, तो भ्रष्टाचार, असमानता और हिंसा जैसे संकट स्वतः समाप्त हो सकते हैं।

.

### निष्कर्ष: गांधीवाद – वर्तमान राजनीति के नैतिक पुनर्जागरण का माध्यम

आज की भारतीय राजनीति उस मोड़ पर खड़ी है जहाँ सत्ता की होड़, धनबल, जातिवाद और सांप्रदायिकता ने उसके आदर्शों को कमजोर किया है। ऐसे समय में गांधीवाद केवल एक विचारधारा नहीं, बल्कि नैतिक पुनर्जागरण का माध्यम बन सकता है। गांधीजी के सत्य, अहिंसा, और सेवा के सिद्धांत राजनीति को मानवीय, पारदर्शी और उत्तरदायी बनाने की क्षमता रखते हैं।

गांधीवादी सोच राजनीति में "लोक के प्रति जवाबदेही" और "सेवा की भावना" को पुनः स्थापित करती है। राजनीति यदि जनकल्याण का माध्यम बने, तो लोकतंत्र की आत्मा सशक्त होगी। गांधीजी की ग्राम स्वराज, स्वावलंबन, और सामाजिक समरसता की अवधारणाएँ आज भी भारत के विकास मॉडल के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती हैं।

**अंततः** गांधीवाद अतीत का अवशेष नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा है। यह भारतीय राजनीति को आत्मा प्रदान करता है और उसे मानवीय संवेदनाओं से जोड़ता है। यदि राजनीति गांधीजी के मार्ग पर लौटे, तो भारतीय लोकतंत्र न केवल सशक्त, बल्कि नैतिक रूप से भी समृद्ध होगा।

### संदर्भ सूची


1. Gandhi MK. Hind Swaraj or Indian Home Rule- Navajivan Publishing House, Ahmedabad,1938.
2. Fischer Louis. The Life of Mahatma Gandhi. Harper & Row New York, 1950.
3. Parekh, Bhikhu. Gandhi*s Political Philosophy: A Critical Examination. Macmillan, 1989.
4. Nanda BR. Mahatma Gandhi: A Biography- Oxford University Press, New Delhi, 1958
5. Dalton, Dennis. Mahatma Gandhi: Nonviolent Power in Action. Columbia University.
6. Iyer, Raghavan N. The Moral and Political Thought of Mahatma Gandhi. Oxford University Press, 1973.
7. Brown, Judith M. Gandhi: Prisoner of Hope. Yale University Press, 1989.